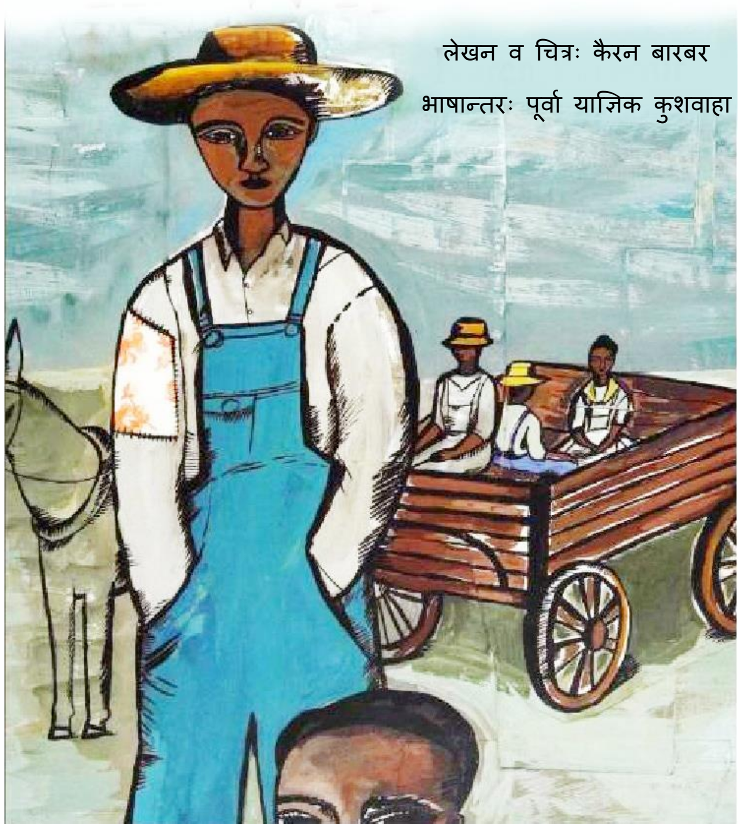
मिस्टर विलियम्स



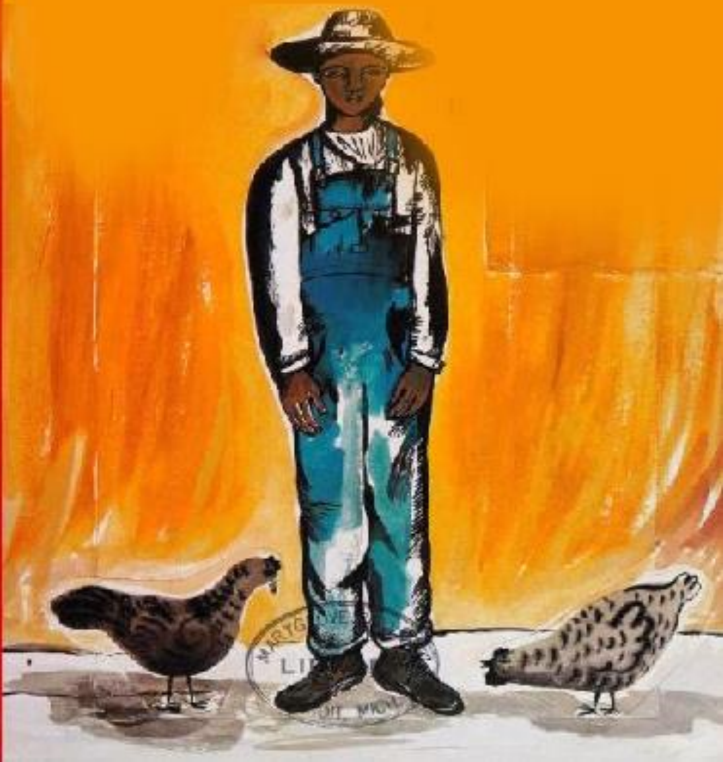
लेखन व चित्रः कैरन बारबर

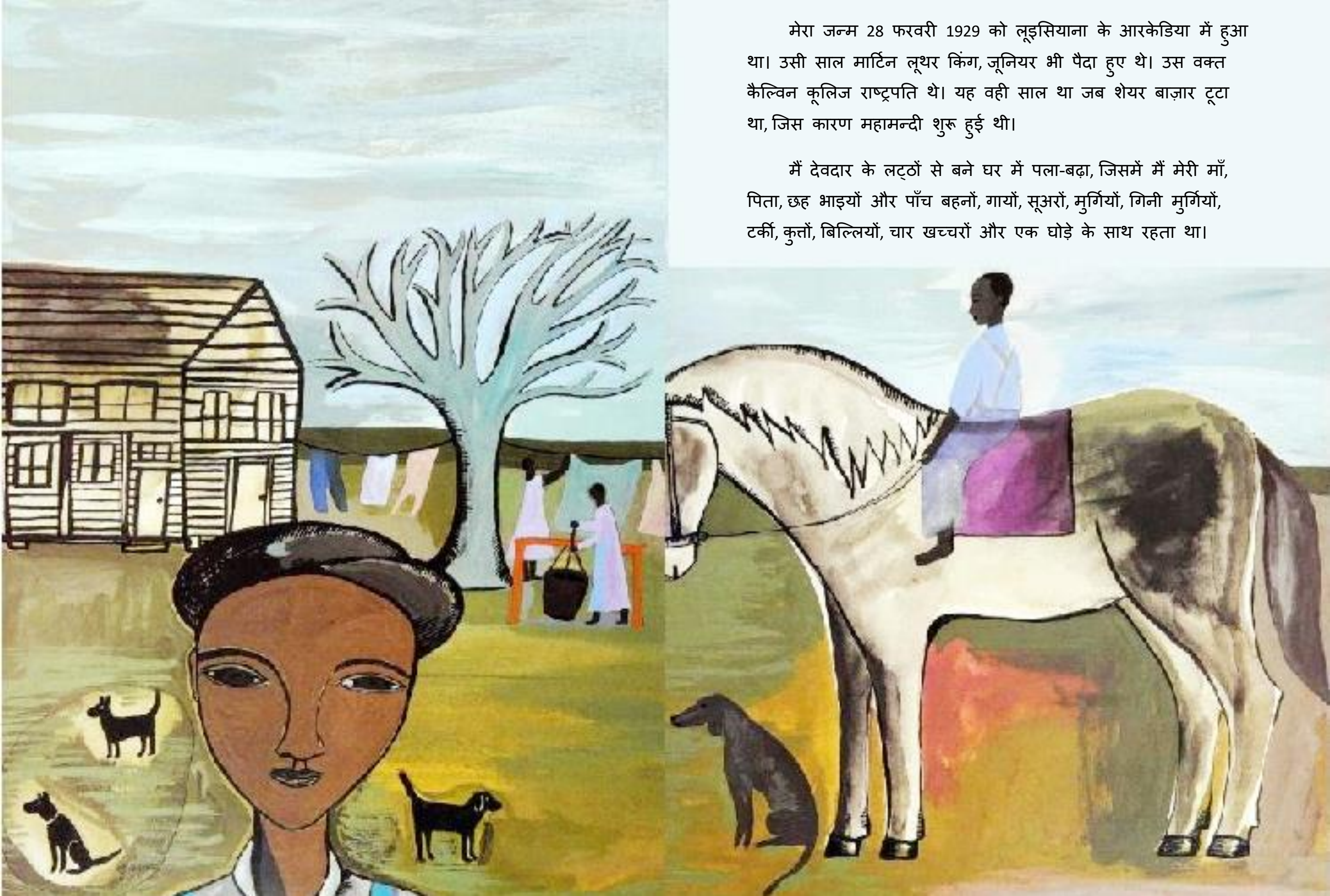
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मिस्टर विलियम्स

लेखन व चित्रः कैरन बारबर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा





मेरा जन्म 28 फरवरी 1929 को लूइसियाना के आरकेडिया में हुआ था। उसी साल मार्टिन लूथर किंग, जूनियर भी पैदा हुए थे। उस वक्त कैल्विन कूलिज राष्ट्रपति थे। यह वही साल था जब शेयर बाज़ार टूटा था, जिस कारण महामन्दी शुरू हुई थी।

मैं देवदार के लट्ठों से बने घर में पला-बढ़ा, जिसमें मैं मेरी माँ, पिता, छह भाइयों और पाँच बहनों, गायों, सूअरों, मुर्गियों, गिनी मुर्गियों, टर्की, कुत्तों, बिल्लियों, चार खच्चरों और एक घोड़े के साथ रहता था।

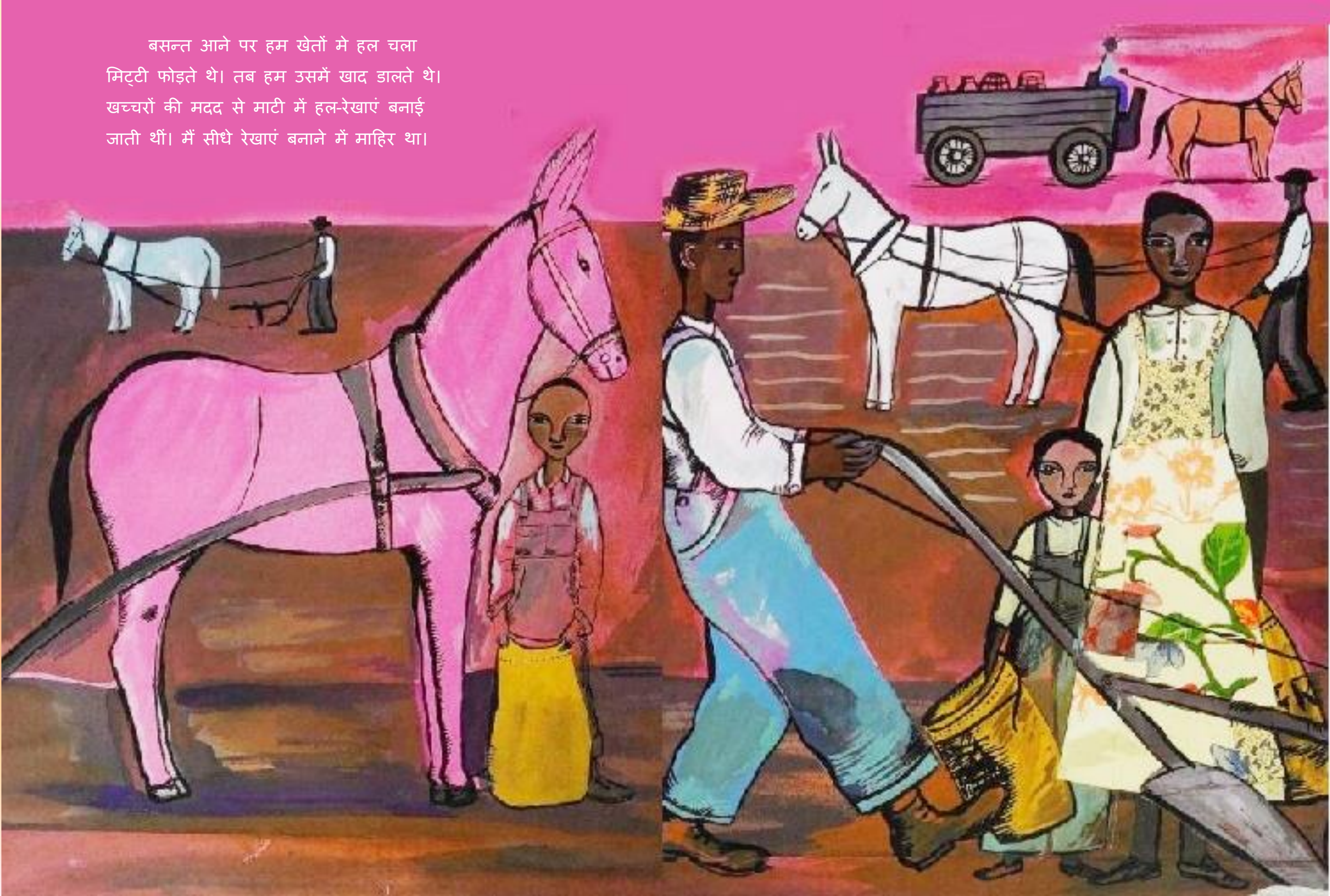
हमारे घर में सात कमरे थे, उनमें अन्दर भी रंग-रोगन नहीं था। ढ़ेरों खिड़कियाँ थीं, और पीछे जहाँ रसोई थी, उसके पास एक बड़ा-सा बरामदा था। ठीक किसी कमरे जैसा। गर्मियों में हम सब वहीं खाते थे। घर में कोई नहानघर या शौचालय नहीं था। हम बाहर बने शौचालय का इस्तेमाल करते थे। घर के पास ही दलदल, झीलें और पोखर थे। सरो के पेड़ों की जड़ें दलदल तक पसरी हुई थीं और बड़े घुटनों-सी दिखती थीं। दलदल में मगरमच्छ, सांप और कछुए थे, जिनके अण्डे रेत में दबे होते थे।





मैं अपने बड़े भाई क्लीओ के साथ एक दोहरे बिस्तर में सोता था और जॉनी का एकल बिस्तर था। बाकी चारों लड़के और पाँचों लड़कियाँ दूसरे कमरों में सोते थे। मेरी माँ हमें जॉनी लोमड़ी, ब्रेयर खरगोश और बिली ऊदबिलाव की कहानियाँ सुनाती थी।

बसन्त आने पर हम खेतों मे हल चला मिट्टी फोड़ते थे। तब हम उसमें खाद डालते थे। खच्चरों की मदद से माटी में हल-रेखाएं बनाई जाती थीं। मैं सीधे रेखाएं बनाने में माहिर था।



हम कपास, मक्की, मूंगफली, मटर, आलू, खरबूज, तरबूज, ज़मींकंद, ईख, शकरकंद और जई (ओटस) उगाते थे। जई के बीज हम खेत में आगे-पीछे चलते हुए हाथ से बिखेरते थे। बाकी बीज खच्चर के पीछे लगी मशीन की मदद से बोए जाते थे।

हमारा घोड़ा और खच्चर खेत में काम करते थे। खच्चर आधा घोड़ा और आधा गधा होता है। सब अपने खच्चरों की देखभाल करते थे। उन्हें जई और फूस खिलाई जाती थी और दिन में दो बार उन्हें ब्रश से रगड़ा जाता था। सुबह खेत जाने से पहले और दिन में दोपहर का खाना खाने के वक्त। वे मिट्टी में लोट लगा लेते, तो उन्हें फिर से रगड़ना पड़ता। घर वापस लाने के पहले उन्हें ठीक से रगड़ना ज़रूरी था, नहीं तो हम मुश्किल में फंस सकते थे।



गर्मियों में कपास के पौधों में बड़े सफेद फूल आते थे। बर्फवाला हर दूसरे दिन हमारे बर्फ-बक्से में बर्फ की बड़ी सिल्लियाँ ला रखता था। हमारे घर में बिजली नहीं थी।

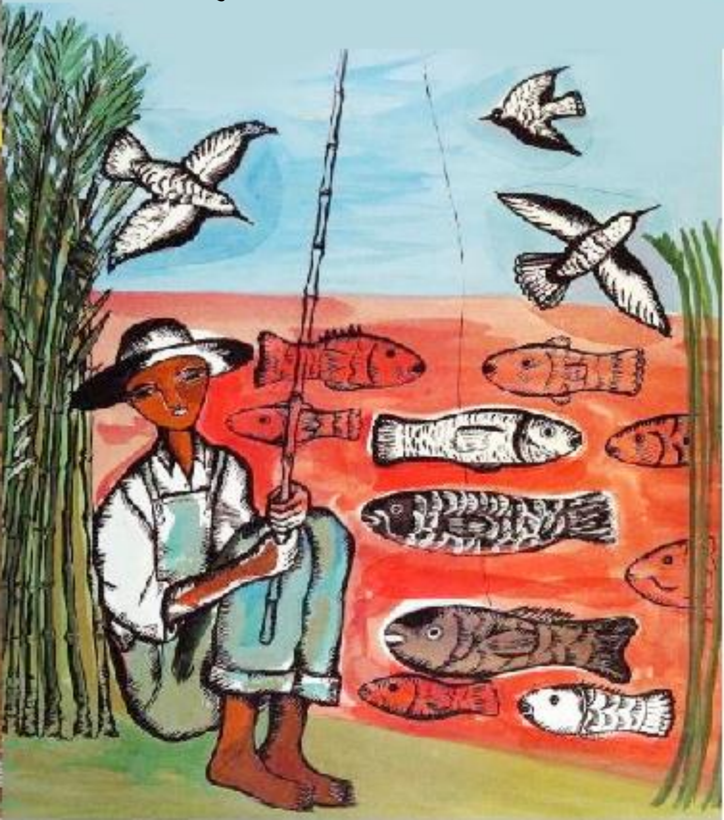
अमूमन हर पखवाड़े बरसात हाती थी। आप उन बादलों को तेज़ी से गुज़रते देख सकते थे। और तब बड़ा तूफान आता। पर कभी-कभी पूरे महीने बारिश होती। इससें पौधे ढुलक-से जाते और माँ और डैडी फिक्र में पड़ जाते।



हर दिन पौ फटने के साथ ही उठ कर मैं अपने परिवार के साथ नाश्ता करता। हम नाश्ते में डबल-रोटी और अण्डे के साथ सूअर का माँस खाते।



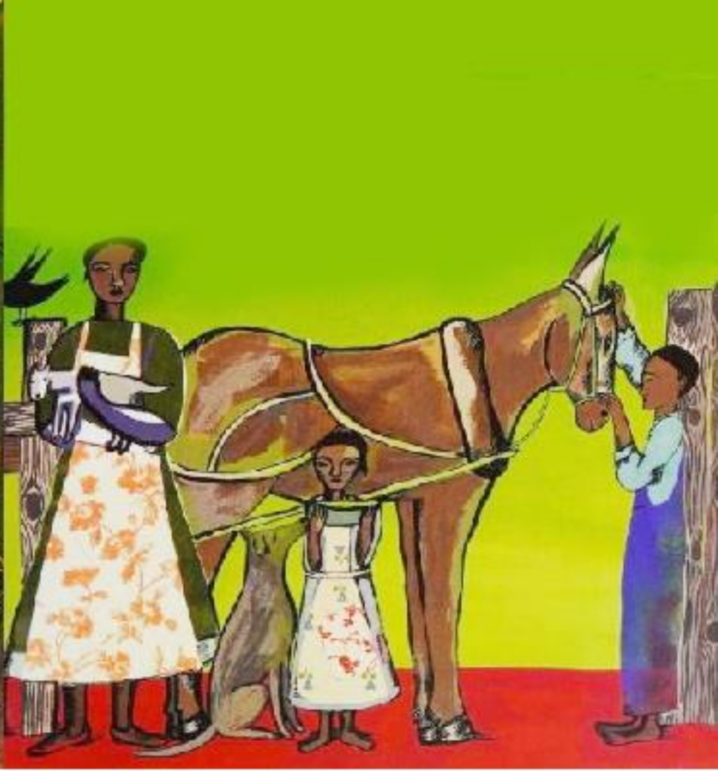
शनिवार को हम दोपहर तक ही काम करते। उसके बाद हम पोखर में तैरने जाते या बड़ी नहरों में बड़ी कैट मछली, दलदली कैट मछली और नीली कैट मछली पकड़ने जाते। हमारी बंसियाँ, पतली बाँसों से बनी होती थीं। चारे के लिए हम झिंगुर और टिड्डे, या कीड़े और इल्लियों का इस्तमाल करते थे।



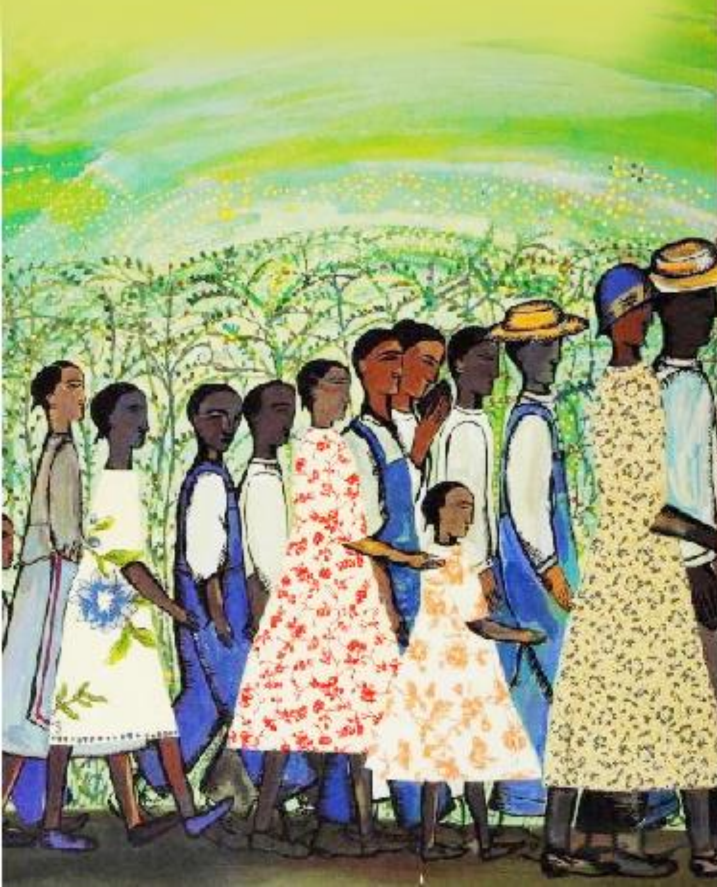
कभी गर्मी इतनी तेज़ होती कि हम सुबह जल्दी उठते और बस ग्यारह बजे तक काम करते। तब घर लौट, खुद को पंखा झलते बैठे रहते। शाम चार या पाँच बजे, जब मौसम कुछ ठण्डा पड़ता हम फिर से खेतों में काम पर लौटते।



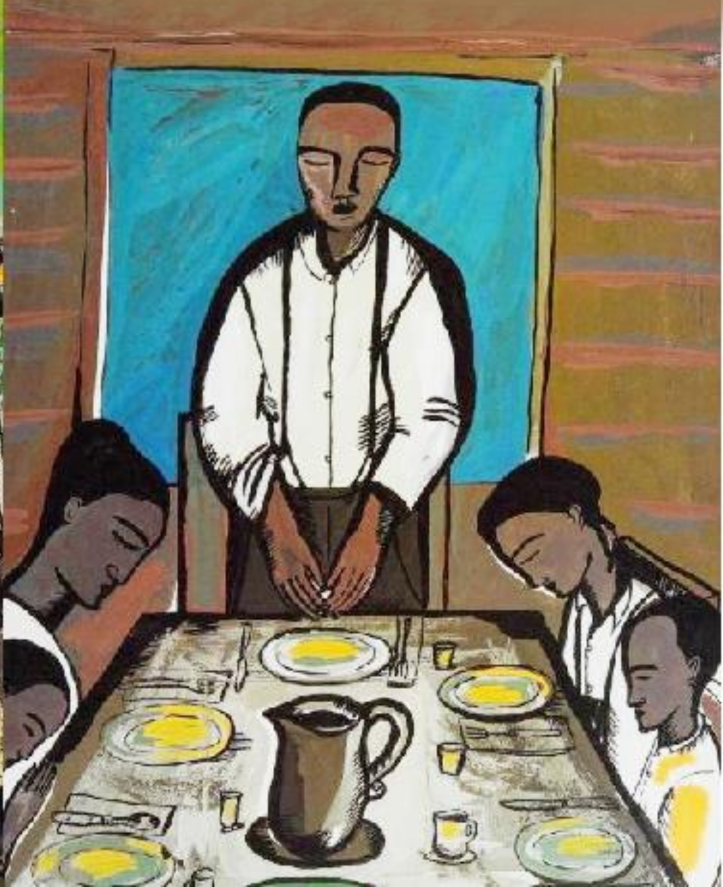
हम तब रुकते जब सूरज ढ़ल जाता। हम घर लौट पहले अपने पशुओं खिलाते-पिलाते। कुत्ते सबसे आखिर में खाते थे। तब जाकर हमारे खाने का समय होता। हम तसले में हाथ-मुँह धोते, जिसे कुंए के पानी से भरी बाल्टियों से तैयार रखा जाता था, क्योंकि हमारे यहाँ नलके का पानी नहीं था।



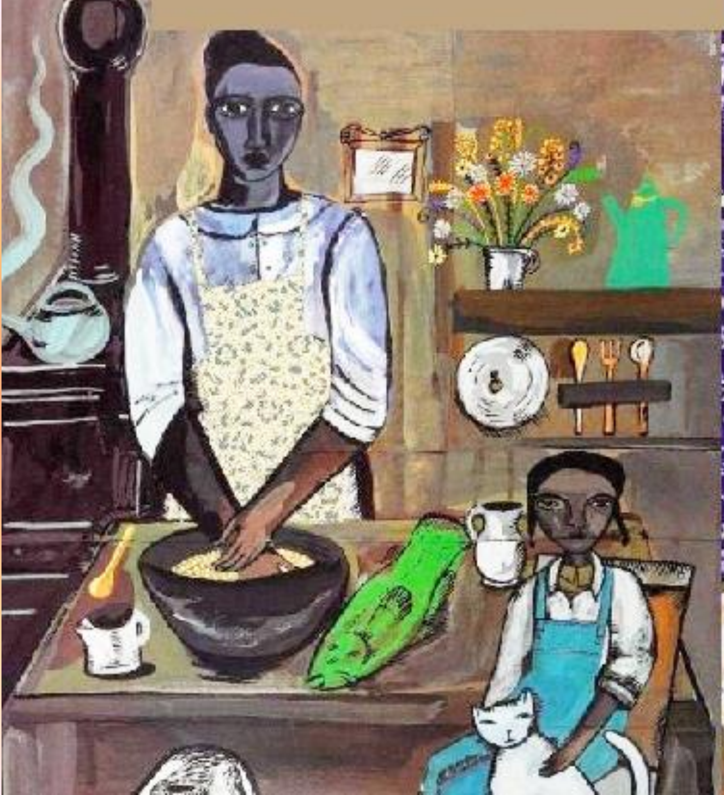
हर इतवार हम सब पैदल गिरजे जाते।



हर रात खाने के पहले मेरे पिता भोजन को आशीषते।



अगर माँ कैट मछली पकाती, तो वह कटोरे में मक्की और गेहूँ का आटा मिलाती। एक कढ़ाई में मूंगफली या सोयाबीन का तेल और लहसुन डाल मछली को तलती। उसके साथ हम मटर या सेम की फली और हरी पत्तियाँ, पत्तागोभी, या चुकंदर के पत्ते या लीमा फलियाँ और मक्की की डबल-रोटी खाते थे।



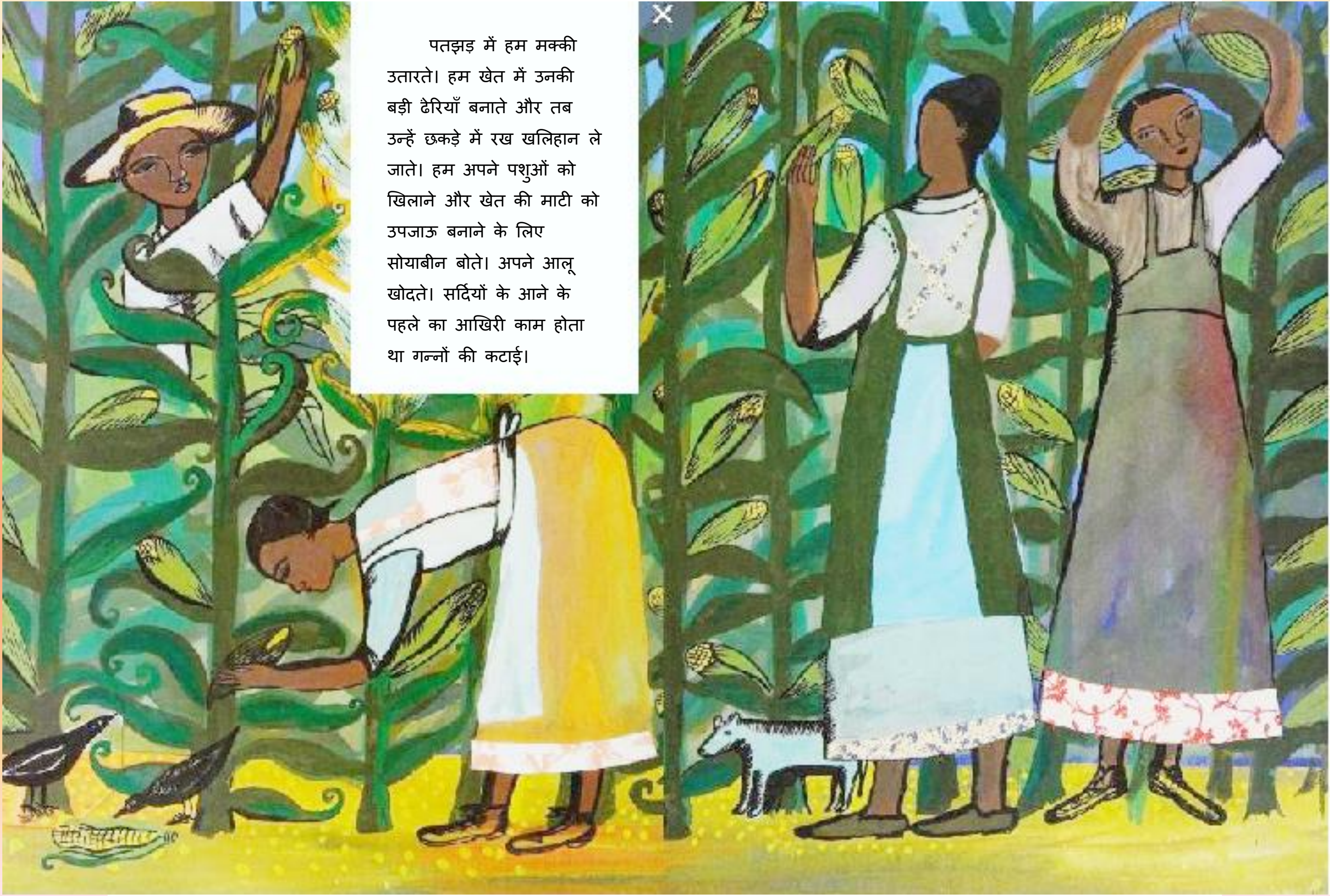
गर्मियों की शामों को मैं एक तकिया ले बरामदे में लेट जाता। क्योंकि कभी इतनी गर्मी होती थी कि घर के अन्दर जाने का मन ही नहीं करता। मैं उल्लुओं और दूसरे पाखियों को पुकारते सुनता। मेढ़कों को टर्राते और लोमड़ियों को अजीब कुत्तों-सी आवाज़ में भौंकते सुनता। हवा इस कदर स्तब्ध होती कि मच्छरों की भिनभिनाहट सुनी जा सकती थी और गंधराज व मधुमालती की खुशबू सूंघी जा सकती थी। आसमान साफ होता और आप नज़र उठा तारों को देख सकते थे।



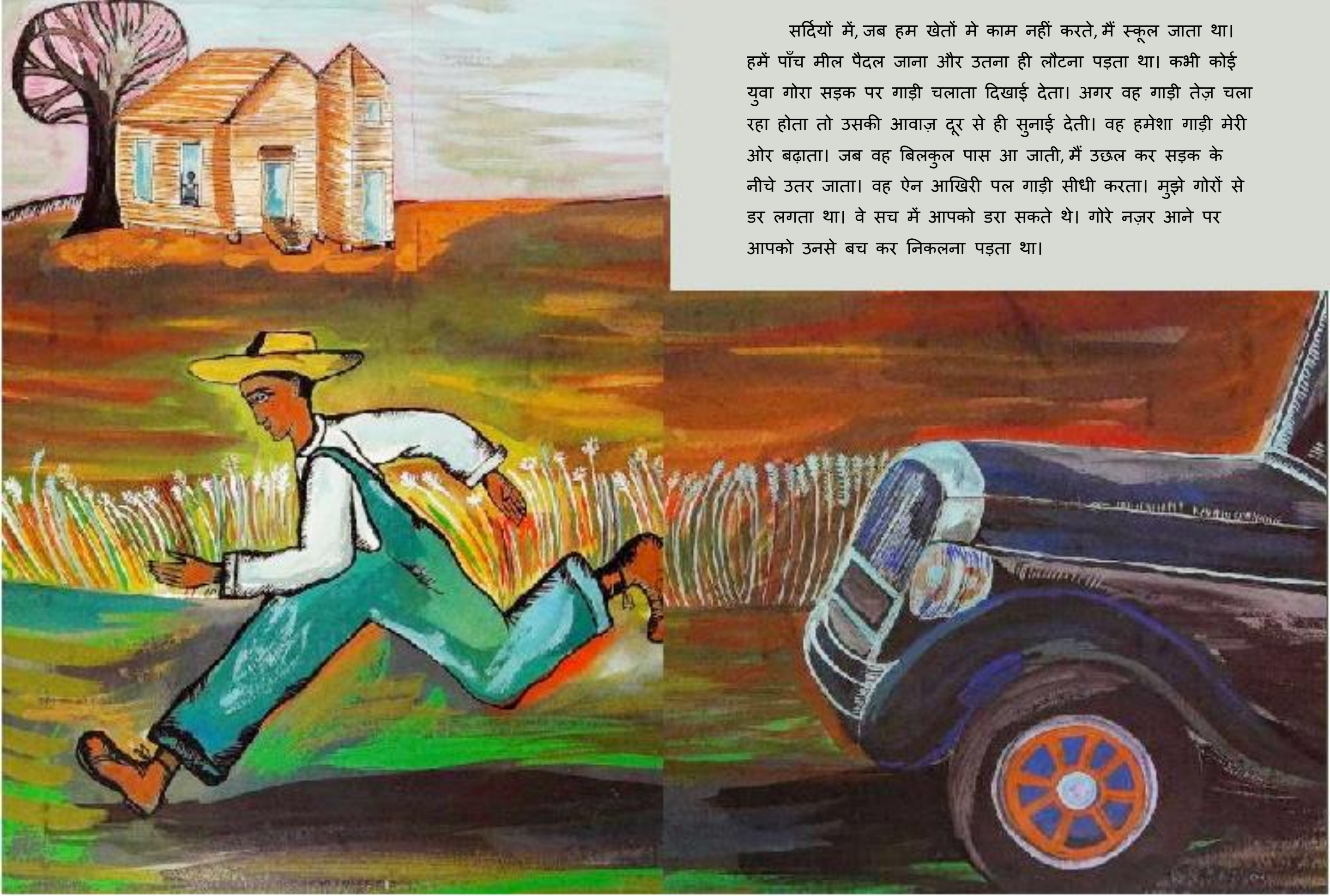
देर गर्मियों में मैं कपास चुनने में मदद करता। चुनी हुई कपास मै एक बड़ी-सी थैली में डालता जाता, जो मेरे पीछे ज़मीन पर घिसटती जाती थी। उसी समय हम आड़ू, आलूबुखारे, अंजीर, और नाशपाती भी चुनते। जैसे ही सब्ज़ियाँ पकने लगतीं हम उन्हें भी बाग से उतारते। हम तरबूज खाते और उन्हें अपने सूअरों को भी खिलाते।



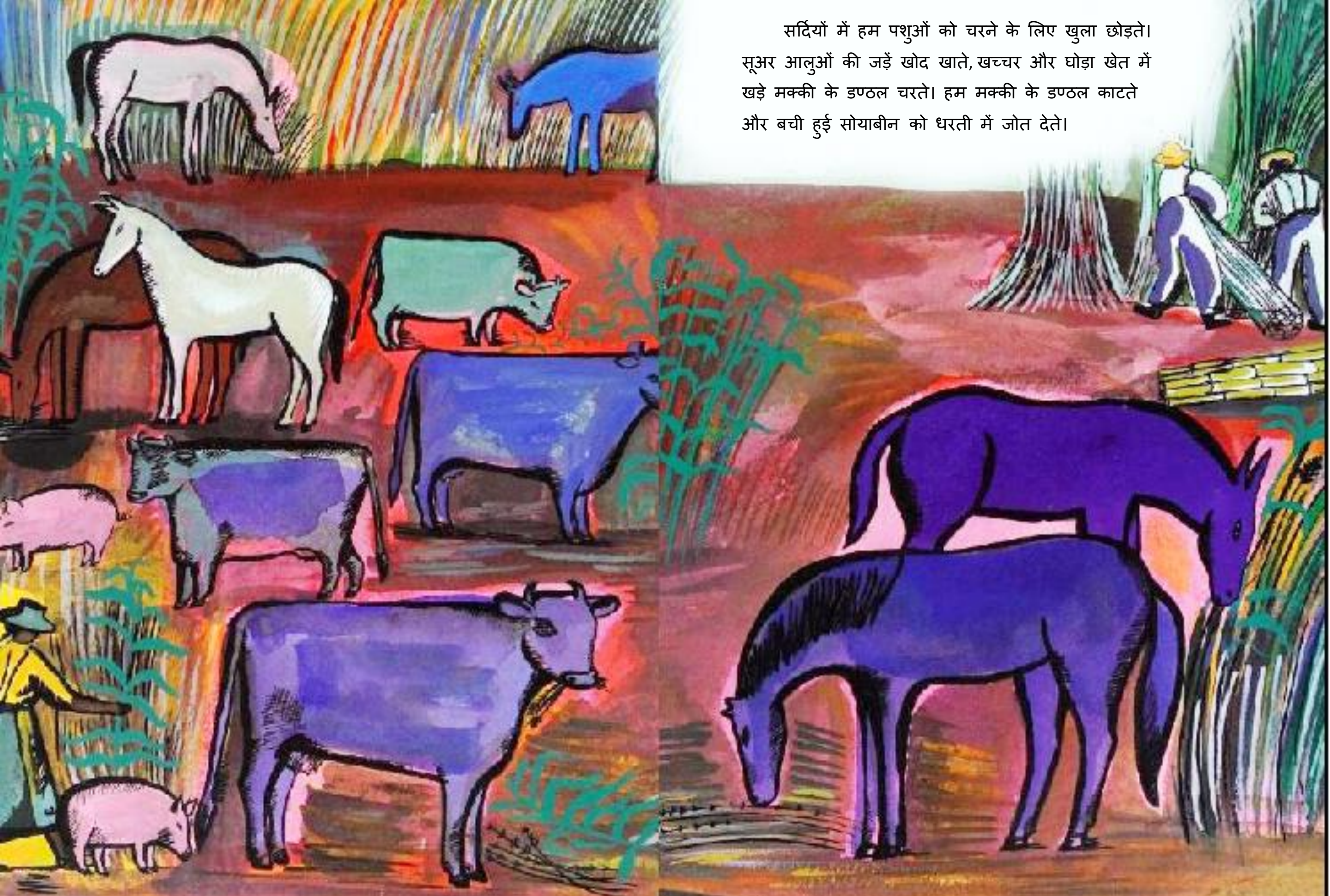




पतझड़ में हम मक्की उतारते। हम खेत में उनकी बड़ी ढेरियाँ बनाते और तब उन्हें छकड़े में रख खलिहान ले जाते। हम अपने पशुओं को खिलाने और खेत की माटी को उपजाऊ बनाने के लिए सोयाबीन बोते। अपने आलू खोदते। सर्दियों के आने के पहले का आखिरी काम होता था गन्नों की कटाई।



सर्दियों में, जब हम खेतों मे काम नहीं करते, मैं स्कूल जाता था। हमें पाँच मील पैदल जाना और उतना ही लौटना पड़ता था। कभी कोई युवा गोरा सड़क पर गाड़ी चलाता दिखाई देता। अगर वह गाड़ी तेज़ चला रहा होता तो उसकी आवाज़ दूर से ही सुनाई देती। वह हमेशा गाड़ी मेरी ओर बढ़ाता। जब वह बिलकुल पास आ जाती, मैं उछल कर सड़क के नीचे उतर जाता। वह ऐन आखिरी पल गाड़ी सीधी करता। मुझे गोरों से डर लगता था। वे सच में आपको डरा सकते थे। गोरे नज़र आने पर आपको उनसे बच कर निकलना पड़ता था।



सर्दियों में हम पशुओं को चरने के लिए खुला छोड़ते। सूअर आलुओं की जड़ें खोद खाते, खच्चर और घोड़ा खेत में खड़े मक्की के डण्ठल चरते। हम मक्की के डण्ठल काटते और बची हुई सोयाबीन को धरती में जोत देते।

हमारे क्रिसमस का खाना दादा-दादी, चाचियों-मौसियों, चाचाओं-मौसाओं और उनके बच्चों के साथ हुआ करता था। हम टर्की और शकरकन्द, आड़ू और सेब व नाशपाती के पाई (मीठा पकवान) खाते। हम सर्दियों में सेब और नाशपाती को सुखाते भी थे।

हमें ढ़ेरों तोहफे नहीं मिलते थे, पर हम कई खेल खेलते और जम कर हंसते। हमें क्रिसमस के दिन मशक्कत नहीं करनी पड़ती थी। हमें यह बहुत अच्छा लगता था। *उस समय ऐसा होता था, जो बहुत समय पुरानी बात है।*



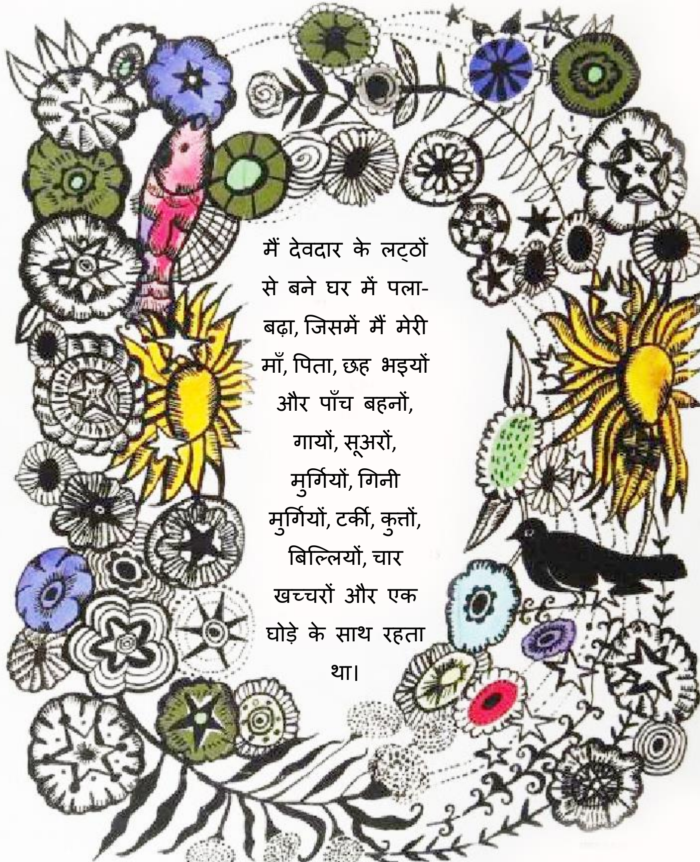


मिस्टर विलियम्स
(1929-2000)

लेखिका की कलम से

जब मैं बहुत छोटी थी तब मैं जे. डबल्यू. जेम्स को जानती थी। वे और मेरी माँ रसोई की मेज़ पर बैठे घंटों बतियाते और हंसा करते थे। मैं उनकी मधुमक्खियों और खच्चरों की और लूइसियाना में बड़े होने के किस्से सुना करती थी। उनकी मृत्यु के पहले मैं उनके साथ बैठी और उनके जीवन की कहानी लिखी। मैंने कोशिश की है कि मैं उनकी स्मृतियों को ठीक उसी तरह पेश कर सकूं, जैसे उन्होंने मुझे बताई थीं।





मैं देवदार के लट्ठों
से बने घर में पला-
बढ़ा, जिसमें मैं मेरी
माँ, पिता, छह भइयों
और पाँच बहनों,
गायों, सूअरों,
मुर्गियों, गिनी
मुर्गियों, टर्की, कुत्तों,
बिल्लियों, चार
खच्चरों और एक
घोड़े के साथ रहता
था।